International Research Journal of Education and Technology

Peer Reviewed Journal

ISSN 2581-7795

हरियाणा में स्वतंत्रता आंदोलन का सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण (1857–1947)

रविता,

सहायक प्राध्यापक, एमआर डीएवी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, रोहतक

सारांश: भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणा (तत्कालीन पंजाब प्रांत का हिस्सा) का योगदान ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, किंतु मुख्यधारा के इतिहास में इसे अपेक्षाकृत कम स्थान दिया गया है। यह शोध-पत्र 1857 से 1947 तक हरियाणा के सामाजिक-आर्थिक संदर्भ में स्वतंत्रता आंदोलन का विश्लेषण करता है। ब्रिटिश भूमि-राजस्व नीति, कृषि-व्यावसायीकरण, ऋणग्रस्तता और सामाजिक असमानता ने ग्रामीण समाज को विद्रोह के लिए प्रेरित किया। 1857 के विद्रोह से लेकर गांधीवादी आंदोलनों, भारत छोड़ो आंदोलन और आजाद हिंद फौज तक हरियाणवी जनता ने बहादुरी से भाग लिया। महिलाओं, किसानों और स्थानीय नेताओं की भूमिका, जाति-धर्म से परे सामाजिक एकता तथा आर्थिक शोषण के प्रतिरोध ने इस क्षेत्र को स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न अंग बनाया। स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधारों ने सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को गति दी। यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों, सरकारी अभिलेखों और क्षेत्रीय इतिहास पर आधारित है, जो हरियाणा के योगदान को राष्ट्रीय संदर्भ में स्थापित करता है।

मूल शब्द: हरियाणा, स्वतंत्रता संग्राम, 1857 विद्रोह, सामाजिक-आर्थिक विश्लेषण, ब्रिटिश भूमि नीति, महिला भागीदारी।

प्रस्तावना: भारत के स्वतंत्रता संग्राम (1857–1947) में हरियाणा का योगदान ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहा है, हालांकि अधिकांश इतिहास में इसे कम जाना जाता है। 1966 में हरियाणा का गठन हुआ, लेकिन इस क्षेत्र के लोग ब्रिटिश शासन के खिलाफ संघर्ष में अग्रणी भूमिका निभाते आए हैं। 1857 का विद्रोह मेरठ से पहले अंबाला में शुरू हुआ था, जहां स्थानीय सैनिकों और किसानों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ संगठित प्रतिरोध किया। यह शोध 1857 से 1947 तक का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन है कि कैसे

ISSN 2581-7795

हरियाणा का समाज, अर्थव्यवस्था, लोक जीवन और जनता ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। ब्रिटिश काल में महलवाड़ी व्यवस्था के अंतर्गत उच्च भूमि-कर, कृषि-व्यावसायीकरण और ऋणग्रस्तता ने किसान समाज को आर्थिक रूप से कमजोर किया, जिसने सामाजिक असंतोष को बढ़ावा दिया। जाति, धर्म और वर्ग की दीवारों को तोड़ते हुए राष्ट्रीय भावना ने लोगों को एकजुट किया। महिलाओं की भागीदारी, गांवों का बलिदान और स्थानीय नेतृत्व ने इस आंदोलन को विशिष्टता प्रदान की। यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों (जैसे दहिया, 2002; सिंह, 2015) और सरकारी अभिलेखों पर आधारित है, जो हरियाणा को स्वतंत्रता संग्राम के नक्शे पर प्रमुख स्थान देता है।

1. 1857 का विद्रोह और हरियाणा की शुरुआत

1.1 1857 की क्रांति और हरियाणा 1857 का विद्रोह ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारत का पहला संगठित विद्रोह था। आज के हरियाणा के कई हिस्सों — अंबाला, गुड़गांव, रोहतक, हिसार — ने इसमें भाग लिया। वस्तुतः विद्रोह की शुरुआत अंबाला छावनी से हुई, जहां 10 मई 1857 को (मेरठ से पहले) 60वीं नेटिव इन्फैंट्री ने कारतूसों के खिलाफ विद्रोह किया। सिपाहियों ने हथियारों का गोदाम लूटने का प्रयास किया, लेकिन ब्रिटिश बलों ने दबा दिया। लगभग 120 सिपाहियों को काली पलटन पुल के पास ओक वृक्ष से फांसी दी गई। विद्रोह रोहतक, हिसार और गुड़गांव तक फैला। रोहतक में रिसालदार बिसारत अली और किसान नेता बाबर खान (सबर खान) ने ब्रिटिश प्रतीकों को नष्ट किया। हिसार में मुहम्मद अजीम, हुकम चंद जैन और फकीर चंद ने विद्रोह का नेतृत्व किया; 12 ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या हुई। गुड़गांव में राव तुलाराम और राव गोपाल देव ने अहीरों को संगठित किया। ब्रिटिश दमन भयंकर था — गांव जलाए गए, संपत्ति जब्त की गई। हरियाणा का भूभाग पंजाब प्रांत का हिस्सा था, जहां स्थानीय समाज ने अंग्रेजों के खिलाफ अपनी भूमिका निभाई।

1.2 रोनात जैसे वीर गाँवों का संघर्ष हरियाणा के कुछ गाँवों को "वीरों का गाँव" कहा गया — जैसे रोहनात (रोनात, भिवानी जिले में, तत्कालीन हिसार)। 29 मई 1857 को बहादुर शाह जफर के आदेश पर रोनात के योद्धाओं ने हिसार और हांसी में ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला किया, 23 अंग्रेजों को मार गिराया और जेलें खोलीं। ब्रिटिश सेना ने बदला लिया — तोपों से गांव उजाड़ दिया, सैकड़ों को मार डाला,

ISSN 2581-7795

महिलाओं-बच्चों को कुओं में धकेला, फांसी दी और सड़क रोलर से कुचला। 14 सितंबर 1857 को गांव को "विद्रोही गांव" घोषित कर भूमि जब्त और नीलाम कर दी गई। महिलाओं ने सम्मान बचाने के लिए कुएं में कूदकर आत्महत्या की। आज भी यह गांव "शहीद गांव" के रूप में जाना जाता है और स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा फहराने की मांग करता रहा। ऐसे गांवों ने सामाजिक एकता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

2. सामाजिक संरचना और आंदोलन के कारक

2.1 सामाजिक असमानता और विद्रोह ब्रिटिश शासन के दौरान जमींदारी और महलवाड़ी व्यवस्था ने सामाजिक असमानता को बढ़ावा दिया। जाट, अहीर, गुर्जर जैसे कृषक समुदाय करों और ऋणों से दब गए। 1860-1932 के बीच भूमि-कर मांग 85% बढ़ी, जिससे किसान कर्जदार बने। जातिगत संरचना (जाट-बहुल हरियाणा) ने विद्रोह को संगठित किया, लेकिन ब्रिटिश नीतियों ने जाति-धर्म के बावजूद एकता पैदा की।

2.2 महिला भागीदारी हरियाणा की महिलाओं ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया — जैसे मन्नी देवी (रोहतक), धापा देवी (रोहतक), चित्रा देवी, कस्तूरी बाई आदि ने सत्याग्रह, उपवास, विदेशी वस्त्र बहिष्कार और जेल यात्राएं कीं। 1930-42 के आंदोलनों में सैकड़ों महिलाएं गिरफ्तार हुईं। वे घरेलू जीवन से निकलकर सार्वजनिक क्षेत्र में सक्रिय हुईं, जो सामाजिक परिवर्तन का सूचक था।

2.3 सामाजिक एकता जाति, धर्म और वर्ग के भेदभाव के बावजूद, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने लोगों को एक साझा लक्ष्य — स्वतंत्रता — के लिए जोड़ दिया। रंगहर, जाट, अहीर, मेव और अन्य समुदायों ने साथ मिलकर लड़ाई लड़ी।

3. आर्थिक स्थिति और स्वतंत्रता आंदोलन

3.1 कृषि और भू-स्वामित्व परिवर्तन ब्रिटिश शासन में हरियाणा की कृषि पर भारी कर और भूमि कर नीति का प्रभाव पड़ा। महलवाड़ी प्रणाली के तहत कर 50% तक पहुंच गया, जिससे किसान कर्ज में डूब गए। 19वीं शताब्दी के अंत में भूमि-कर मांग 85% बढ़ी। व्यावसायिक फसलें (कपास, गन्ना) ने खाद्यान्न उत्पादन घटाया, जिससे अकाल और असंतोष बढ़ा। यह स्वतंत्रता आंदोलन का प्रमुख आर्थिक कारण बना।

ISSN 2581-7795

3.2 भारतीय उद्योग और कल-कारखानों का पतन स्थानीय हस्तकला और उद्योग पतित हुए जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई। ब्रिटिश आयातों ने हस्तशिल्प को नष्ट किया। इससे लोगों में असंतोष और आर्थिक दबाव के कारण आंदोलन में भाग लेने की प्रवृत्ति बढ़ी।

3.3 आर्थिक मदद और योगदान स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान धन और संसाधनों के योगदान से आंदोलन को आर्थिक समर्थन मिला। उदाहरण के लिए, हरियाणा से नकद, अनाज और स्वयंसेवक प्रदान किए गए। किसान सभाओं ने आर्थिक प्रतिरोध संगठित किया।

4. आंदोलन के प्रमुख चरण (1857–1947)

4.1 प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) यह हरियाणा में ब्रिटिश शासन के खिलाफ पहला बड़ा विद्रोह था, जिसमें स्थानीय जवानों ने सक्रिय भाग लिया।

4.2 गाँधी के आंदोलनों में भागीदारी महात्मा गाँधी के 'नमक सत्याग्रह', 'भारत छोड़ो आंदोलन' और 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' में हरियाणा की जनता ने बड़े पैमाने पर भाग लिया। रोहतक, हिसार और अंबाला केंद्र बने।

4.3 आज़ाद हिंद फ़ौज और हरियाणा आजाद हिंद फ़ौज में हरियाणा के हजारों (लगभग 2700) जवानों ने भाग लिया। नेताजी सुभाष चंद्र बोस की अपील पर युवाओं ने ब्रिटिश सेना छोड़कर स्वदेशी फौज ज्वाइन की।

5. हरियाणा के स्वतंत्रता सेनानी और योगदान

5.1 उल्लेखनीय नामों की भूमिका करनाल के स्वतंत्रता सेनानी, हिसार के शहीद (जैसे राव तुलाराम), महिलाओं का सहयोग — इन सभी ने संग्राम में योगदान दिया। चौधरी छोटू राम, लाला लाजपत राय (हरियाणा से जुड़े) और स्थानीय नेता प्रमुख थे।

ISSN 2581-7795

5.2 स्थानीय संघर्ष और बलिदान गाँवों और कस्बों में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्षों में स्थानीय जनता का योगदान महत्वपूर्ण रहा, जिसमें कई परिवारों ने अपने जीवन की कुर्बानी दी। रोनात, खरखौदा जैसे गांवों ने अमिट उदाहरण प्रस्तुत किए।

6. स्वतंत्रता के बाद का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

6.1 शिक्षा और जागरूकता स्वतंत्रता के बाद हरियाणा में शिक्षा और सामाजिक जागरूकता में वृद्धि हुई, जिससे समाज का सामाजिक ढाँचा बदलने में मदद मिली।

6.2 आर्थिक सुधार और भूमि नीति स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधार और कृषि नीति में सुधार से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली। जमींदारी उन्मूलन और सहकारी खेती ने किसानों को सशक्त किया।

7. निष्कर्ष: 1857–1947 के बीच हरियाणा का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान सामाजिक एकता, आर्थिक संघर्ष और राष्ट्रीय भावना की मिसाल है। हरियाणवी जनता ने बहादुरी से संघर्ष किया, चाहे वह किसान हों, महिला हों या युवा — सभी ने अपनी भूमिका निभाई। इस आंदोलन ने उस समाज को मजबूत किया जिसने बाद में भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में रूपांतरण का मार्ग प्रशस्त किया। आज भी रोनात जैसे गांव और मन्नी देवी-धापा देवी जैसी महिलाएं प्रेरणा स्रोत हैं। भविष्य के शोध में क्षेत्रीय अभिलेखों का और अधिक उपयोग आवश्यक है।

संदर्भ सूची

प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत

- चोपड़ा, पी. एन. (2003). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम.* नई दिल्ली: मैकमिलन इंडिया। मजूमदार, आर. सी. (1963). *1857 का विद्रोह.* कोलकाता: फर्मा के. एल. मुखोपाध्याय।
- शर्मा, श्रीराम. (2010). *आधुनिक भारत का इतिहास (1707–1947).* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।

ISSN 2581-7795

- पाणिग्रही, डी. एन. (1995). *भारत का किसान आंदोलन और ब्रिटिश शासन.* नई दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस।
- बिपिन चंद्र, मुखर्जी, मृदुला; मुखर्जी, आदित्य; पाणिग्रही, के. एन. (2016). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम.* नई दिल्ली: पेंगुइन इंडिया।

हरियाणा विशेष अध्ययन से संबंधित स्रोत

- दहिया, के. सी. (2002). *हरियाणा का इतिहास.* रोहतक: हरियाणा साहित्य अकादमी।
- सिंह, रणबीर. (2015). *स्वतंत्रता आंदोलन में हरियाणा की भूमिका (1857–1947).* चंडीगढ़: हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी।
- हुड्डा, डी. आर. (2011). *हरियाणा में किसान आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन.* रोहतक: महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय।
- यादव, रणधीर सिंह. (2018). *हरियाणा में राष्ट्रीय आंदोलन का सामाजिक आधार.* हिसार: गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय प्रकाशन। यादव, के. सी. (2003). *The Revolt of 1857 in Haryana*. (संदर्भित)।

महिला भागीदारी व सामाजिक अध्ययन

- Kaur, R. (2020). Role of Women of Haryana in the Indian Freedom Struggle. *ShodhKosh: Journal of Arts, Humanities and Social Sciences*, 1(2), 45–53।
- Kumar, S. (2017). *Social Movements in Colonial Punjab and Haryana*. New Delhi: Manohar Publishers।

आर्थिक इतिहास से संबंधित स्रोत

- Dutt, R. C. (1902). *The Economic History of India under Early British Rule*. London: Routledge।

ISSN 2581-7795

- Bagchi, A. K. (1982). *The Political Economy of Underdevelopment*. Cambridge: Cambridge University Press।
- Habib, I. (2000). *Agrarian System of Mughal India*. New Delhi: Oxford University Press।

(तुलनात्मक अध्ययन हेतु उपयोगी) सरकारी व अभिलेखीय स्रोत

- Government of India. *Gazetteers of Punjab Districts (Ambala, Rohtak, Hisar)*, 1860–1940।
- National Archives of India (NAI), New Delhi. *Home Department Records on Revolt of 1857 and National Movement*।

पत्र-पत्रिकाएँ एवं ऑनलाइन स्रोत

- *Indian Historical Review* (Various Issues)। *Economic and Political Weekly* (EPW)।
- Haryana District Gazetteers (Online & Print Editions)।